नारी जागरण के संदेशवाहक—

महर्षि कर्वे



लेखक :—
श्री बैजनाथ गुप्त 'व्रजेन्द्र'

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नारी जागरण के सन्देश-वाहक महर्षि कर्वे



बेटे, तुम्हें पता है कि यहाँ से सतारा कितनी दूर है ? एक सौ दस मील। इतनी लम्बी यात्रा पैदल पूरी करके तुम चौथे दिन सतारा पहुँचकर के किस प्रकार परीक्षा दे सकते हो ? फिर तुम खाली हाथ भी तो नहीं [हो पीठ पर तमाम सामान जो लादे हुए हो। रास्ता खराब है, जङ्गल और पहाड़ों से जाना होगा, चोर लुटेरों का डर भी कम नहीं है। मेरी मानो, घर बैठो। जितना पढ़ लिया वही बहुत है। ज्यादा पढ़ कर करना भी क्या है ? बेकार जान जोखिम में डालने से क्या फायदा ? एक लगभग ४५ साल के बूढ़े ने, पीठ पर सामान लादे और हाथ में किताबों का झोला लिये एक सत्रह वर्ष के किशोर से बड़े अधिकार पूर्वक कहा—

लड़के ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया—"पिता जी, आपकी हर बात को मानूंगा, लेकिन परीक्षा न देने जाकर घर पर बैठ रहने की आज्ञा किसी मूल्य पर भी नहीं मान सकता। मुझे परीक्षा देनी है। उसे देने जाऊँगा रास्ता कितना ही कठिन और सङ्कटपूर्ण क्यों न हो। विद्या प्राप्त करने के लिये मैं बड़े से बड़ा कष्ट और सङ्कट उठाने को तैयार हूँ।"

इस नवयुवक विद्यार्थी का वास्तविक नाम धोडो केशव कर्वे है। अण्णा साहब उसका घरेलू नाम है जिसके कारण लोग अण्णा साहब कर्वे भी कहते हैं। यही वह लगनशील विद्यार्थी है जो आगे चलकर अपने तप, त्यागपूर्ण सत्कर्मों के कारण महर्षि कर्वे के नाम से विश्व-विख्यात हुआ और जिसे भारत सरकार ने भारत-रत्न की उपाधि देकर अपना आभार प्रकट किया। आज भी पूना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तथा उसके समीप पर्वतीय प्रदेश में उसकी स्थापित की हुई समाज कल्याणकारी संस्थायें और उनकी शाखा प्रशाखायें—'अनाथ बालिका श्रम,' 'महिला-विद्यालय में' 'निष्काम-कर्ममठ,' महिला—विद्यापीठ', शुभा-प्राथमिक-शिक्षा-मंडली', तथा 'समता-संच' के नाम से उस अमर कर्मयोगी की यशोगाथा संसार को सुनाती हुई भारतवासियों को समाज सेवा की प्रेरणा दे रही हैं।

भारत का वह भावी महर्षि कर्वे आज सत्रह वर्ष की आयु में अपने गाँव मुरुड से एक सौ दस मील की यात्रा, सामान के साथ पैदल पूरी करके सतारा में छटवीं कक्षा की परीक्षा देने जा रहा है। उसका परिवार इतना निर्धन है कि अपने इस लगनशील बच्चे के लिये किसी सवारी का प्रबन्ध भी न कर सका। इतना गरीब कि पूरे पेट रोटी नहीं, कपड़ों का ठिकाना नहीं, जीवन की अन्य सुविधा सामग्री तो स्वप्न की बातें भी न थीं। इतनी गरीबी कि महाराज बड़ौदा के दान का समाचार सुनकर बालक अण्णा दौड़ा-दौड़ा माँ के पास गया और बोला—माता ! मैं बड़ौदा जाकर महाराज के सदाव्रत में से अन्न वस्त्र और दस रुपये ले आऊँ ? कुछ दिन भोजन का प्रबन्ध हो जायेगा।

बेटे की बात सुनकर माँ की भौंहें चढ़ गईं, बोली—अण्णा, क्या तू पागल हो गया है। क्या दान की भिक्षा लेने की सोच रहा है ? मालूम होता है तू जीवन निर्वाह के लिये भिक्षा माँगकर ही गुजर करेगा। क्या तू गरीबी को बदनाम और कुल को कलङ्क लगाने वाला बनेगा ? गरीबी तो धैर्य तथा पुरुषार्थ की परीक्षा होती है बेटा ! संसार के एक नहीं अधिकाँश महापुरुष गरीब घरों में ही पैदा हुए हैं। उन्होंने अपने परिश्रम, पुरुषार्थ, तप, त्याग तथा अध्यवसाय के बल पर समाज में देवोपम स्थान पाया। यदि वे तेरी तरह निर्बल हृदय के होते तो दान की भिक्षा लेने की सोचते और कीटपतंगों की मौत मर कर चले जाते। गरीबी को एक चुनौती समझ और अभावग्रस्त स्थिति से आगे बढ़कर दिखला।"

माता के इन प्रेरक वचनों ने बालक अण्णा का आमूल मनोकल्प कर दिया और उसने निश्चय किया कि वह हर सङ्कट तथा कष्ट उठाकर विद्यार्जन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करेगा, उसका उपयोग देश की सेवा में करके महनीय मानव-जीवन को सत्कर्मों द्वारा सफल बनाकर माता का आशीर्वाद चरितार्थ करेगा और उसकी यह एक सौ दस मील की पदाति यात्रा उसी सङ्कल्प की दिशा में हुआ एक कदम है। कहना न होगा कि अण्णा ने इस प्रकार कदम कदम बढ़ा कर जिस पद एवं पदवी को प्राप्त किया है वह मनुष्यों की इस भ्रान्त धारणा को एक एक करके फेंक देती है कि निर्धनता उन्नति के मार्ग में एक अवरोध है।

अण्णा ने अपने गाँव की प्रारम्भिक पाठशाला में साधक के भाव में एक लकड़ी के तख्ते पर मिट्टी फैलाकर उङ्गली से अक्षर बनाना प्रारम्भ किया और धीरे-धीरे इसी स्थिति से बढ़कर उस पाठशाला की अन्तिम चौथी कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। आगे पढ़ने को कुछ रह ही न गया। जहाँ विद्यार्थी परीक्षाफल की अनुकूल घोषणा सुनकर हँसते-कूदते घर जाते हैं वहाँ अच्छा उत्तरण की घोषणा सुनकर रोता हुआ घर गया और बोला—'माँ ! मैं पास हो गया।' माँ को बड़ा आश्चर्य हुआ बोली पागल तू रोता क्यों है ? सारे लड़के परीक्षा पास होने की खुशी में हँसते-खेलते घर आते हैं और तू रोता हुआ आया, बतला न क्या बात हुई ? अण्णा ने बड़ी भोली वाणी में कहा—आज में पाठशाला की अन्तिम परीक्षा पास हो गया। अब आगे क्या पढ़ूँगा ऐसा कह कर अण्णा और भी रोने लगा !

माता का महान् हृदय आज पहली बार अपनी निर्धनता का अनुभव करके आर्द्र हो उठा। उसने अण्णा को छाती से लगा कर उसके आँसू पोंछे और कहा—रो मत बेटा ! मैं तुझे आगे पढ़ाऊँगी। तेरी शिक्षा यहीं समाप्त नहीं होने दूँगी। मैं अपने बेटे की ज्ञान-पिपासा को न तो निरुत्साहित करूँगी और न किसी को करने दूँगी। तू अब धीरज रख कल ही पता लगाऊँगी की आगे की पढ़ाई कहाँ हो सकती है। माता का आश्वासन पाकर अण्णा को ढ़ाढस बँधा और आँसुओं से आर्द्र उसकी आँखों में हर्ष तथा उत्साह की मुस्कान दौड़ गई। उसने आँसू पोंछ लिए और खुशी-खुशी खेलने चला गया। क्यों नहीं अण्णा जिसको तुम्हारी जैसी महान् प्रेरक और तपस्विनी माता मिली हो और जिसके आशीर्वाद में तुम्हारी जैसी कर्मठ निष्ठा का निवास हो वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालक आगे चल कर तुम्हारी तरह ही भारत-रत्न महर्षि अण्णा साहब कर्वे के नाम से क्यों न ख्यात होता और क्यों न मातृ रूप भारतीय नारियों की सेवामें अपना प्रत्येक क्षण उत्सर्ग कर कृतार्थ हो जाता।

माता ने पिता को प्रेरित कर पता लगाया कि गाँव से तीन मील दूर दूसरे गाँव में एक सरकारी पाठशाला श्री सोमणगुरु के तत्वाधान में चलती है अण्णा उसमें पाँचवी और छटी कक्षाओं तक शिक्षा पा सकता है। निदान माता ने अपने होनहार बेटे को उक्त पाठशाला में प्रवेश करा दिया।

सोमण गुरु की पाठशाला में अण्णा ने पाँचवीं कक्षा पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही पास करली और सोलह वर्ष की अवस्था में छठी कक्षा की पूरी तैयारी करली। किन्तु उस साल परीक्षा नहीं दे सकते थे—क्योंकि छठी कक्षा की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये सत्रह वर्ष की आयु होना अनिवार्य था। अस्तु अण्णा को एक साल रुकना पड़ा। किन्तु उस विद्या व्यसनी विद्यार्थी ने न तो घर जाकर अवकाश मनाना स्वीकार किया और वह वर्ष यों ही मठर-गश्ती में बरवाद किया। वह अनुरोधपूर्वक गुरु से स्वीकृति लेकर पाठशाला में रहा और स्वयं पढ़ने के साथ, अन्य विद्यार्थियों को गणित पढ़ाता रहा। इस प्रकार न केवल उसने अपनी योग्यता ही प्रखर करली अपितु एक प्रकार से गुरु-ऋण को भी उऋण कर दिया और अब वह पुरुषार्थ का धनी सत्रह साल का नवयुवक होकर परीक्षा देने के लिये, सतारा एक सौ दस मील की पैदल यात्रा पर जा रहा है।

निरन्तर एक गति से सोलह मील की यात्रा कर लेने पर संध्या सघन होने लगी और अण्णा के लिये कहीं ठहर कर रात व्यतीत करना आवश्यक हो गया। निदान वह गाँव के मुखिया की चौपाल में ठहर गया।

मुखिया ने अण्णा से परिचय तथा गन्तव्य के विषय में प्रश्न किया और यह जानकर न केवल गद्गद ही हो उठा, वल्कि स्नेह एवम् सहानुभूति से ओतप्रोत भी हो उठा कि यह नवयुवक विद्यार्थी विद्या के लिये अपार कष्ट सह-कर पैदल सतारा जा रहा है। मुखिया ने अण्णा की पीठ पर प्रेम से हाथ फेर कर कहा—'बेटा तू, अपने जीवन में अवश्य सफल होगा। जो अपने सदु-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



ध्येय के लिए इतना कष्ट उठा सकता है, जिसकी निष्ठा एवं लगन इतनी अडिग एवम् प्राणपूर्ण है उस पुरुषार्थी पर परमात्मा की कृपा सहचरी बनकर साथ रहती है और हर प्रतिकूल परिस्थिति में, हर सङ्कट एवं विपत्ति में, हर असम्भव एवं अभाव में साहस, धैर्य, आस्था तथा सन्तोष बनकर सहायता किया करती है। ऐसी ही अध्यवसायी आत्माओं से समाज की उन्नति तथा मानवता का नाम उज्ज्वल होता है। बेटा ! तूने मानव-जीवन का ठीक-ठीक अर्थ समझा और उसी के अनुसार अपना मार्ग निर्धारित किया है। मेरा तो आशीर्वाद है कि तू अपने लक्ष्य तुल्य मनुष्य के मिलने का कोई प्रसङ्ग ही न आता ! हर कटु अनुभव, आदि विवेकपूर्वक विचार करने और लाभ उठाने की योग्यता का आश्रय लिया जाये, तो एक ऐसी उपयोगी शिक्षा सिद्ध होती है जो आगे के बहुत से कदमों को निरापद बना देती है। मुखिया के उस अनुभव से मेरा सहसा यह निश्चय कर लेना कि—'अब संसार में किसी व्यक्ति पर विश्वास नहीं करूँगा' किसी प्रकार भी उचित अथवा न्याय सङ्गत नहीं था, वह मात्र प्रतिक्रिया का उद्वेग था, विवेकपूर्ण निर्णय नहीं। इसलिये में उसे बदलता हूँ क्योंकि किसी प्रकार के आवेग प्रेरित साहसात्मक निर्णय मनुष्य को अन्धकार की ओर अग्रसर कर देते हैं।

चलते समय अरुणा ने मुखिया को धन्यवाद दिया और उसके तैय्यार किये हुए घोड़े को साथ ले जाने से विनम्रतापूर्वक यह कहकर निषेध कर दिया कि इतनी लम्बी यात्रा में मैं इस अनबोल प्राणी के लिये न तो चारे का प्रबंध कर पाऊँगा और परीक्षाओं व्यस्त रहने के कारण न इसकी देखभाल कर पाऊँगा। अस्तु मेरी विवशता समझकर इस अवज्ञा को क्षमा कर दें और आशीर्वाद के साथ ही विदा दें यही मेरे लिये एक बहुत ही बड़ा सम्बल सिद्ध होगा।

विषम तथा पथरीली कुम्भर्ला घाटी को पार करने समय अरुणा ने आकाश की ओर देखा और माथे का पसीना पोंछा। अन्तरिक्ष के यात्री सप्त ऋषियों की स्थिति ने इस धरती के किशोर यात्री को समय का अनुमान दिया। सुबह के लगभग चार बजे थे। उस दुर्गम घाटी में उस असमय में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अरुणा को भय नहीं प्रसन्नता ही हुई । वह काफी जल्दी चल पड़ा है । दोपहर तक न जाने कितना मार्ग पार कर डालेगा । प्रसन्नता की प्रेरणा पाते ही उसका उत्साह अनेक गुना हो गया और उसकी गति में तीव्रता आ गई । थकान को विथकित करता हुआ अरुणा बढ़ता ही गया और लगभग ग्यारह बजे पारणा पहुँचकर पसीना पोंछा । भोजन के साथ ही विश्राम पूरा करके अरुणा ने सामान उठाया और तीन बजे के लगभग यात्रा प्रारम्भ कर दी, आज का शेष दिन, पूरी रात और दूसरे दिन दस बजे तक का समय अरुणा के पास था उसी में सारी यात्रा पूरी करके सतारा पहुँचना था । उसने एक व्यक्ति से सतारा की दूरी पूछी पता चला छत्तीस मील अभी और चलना है । 'कोई चिन्ता नहीं,' अरुणा उत्साहपूर्वक बढ़ा और चलने लगा । तभी उस राहगीर ने बतलाया कि यदि सीधा रास्ता छोड़कर पहाड़ी रास्ते पर जाने का साहस कर सको तो उसके बारह मील बच जायेंगे । अरुणा ने कहा जरूर-जरूर तब तो मैं दस बजे से बहुत ही पहले सतारा पहुँच जाऊँगा और कुछ देर आराम कर तथा नहा धोकर ताजे होकर परीक्षा में बैठने का अवसर पा सकूँगा । राहगीर ने पहाडी पगडंडी की ओर संकेत कर दिया और अरुणा उस पर चल पड़ा । किंतु वाहरे जीवन संग्राम ! दो तीन मील चलने के बाद अरुणा राह भटक गया और जब संध्यारम्भ तक भी वह घाटी का पार न पा सका तब कुछ चिन्तित हो उठा । एक ओर भयानक दरी और दूसरी ओर पहाड़ की अपरम्पार चोटी । दोनों के बीच पगडंडी पर खड़ा अरुणा परिस्थिति पर विचार करने लगा । अन्धेरा हो चला और हाड हिला देने वाली ठंडी हवा चलने लगी । किन्तु उस भयानक तथा अनिश्चित में भी अरुणा ने साहस तथा आशा का साथ नहीं छोड़ा और वह जीवन संग्राम का अजेय सैनिक उस ओर को चल पड़ा जिधर कुछ प्रकाश दिखाई दे रहा था ।

वह एक पहाड़ी किसान की झोंपड़ी थी । अरुणा ने वहाँ पहुँचकर आश्रय नहीं उस मार्ग का संकेत मागा जो उसके लक्ष्य सतारा की ओर जाता हो । किसान ने उस साहसी नवयुवक को देखा, उसके यात्रा से सूजे हुए पैरों पर दृष्टि डाली और आँखों में झाँका । एक लम्बी पदाति यात्रा के चिन्हों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिवाय उसे कहीं भी तो विश्रान्ति अथवा क्लान्ति के लक्षण दृष्टिगोचर नहीं हुए। उसने आश्चर्य के साथ उससे उस तपस्या का मन्तव्य पूछा। परीक्षा का समय और गन्तव्य की दूरी का विषम अनुपात समझ कर उसने उस आत्म-विश्वासी तथा एक निष्ठ यात्री से रुकने के लिये फिर ज्यादा नहीं कहा और कुछ दूर चल कर सही रास्ते पर डाल दिया।

जीवन संग्राम का सूरमा अण्णा सतारा पहुँचा किन्तु हन्त! दस बजे सबेरे परीक्षा के समय नहीं, शाम के पाँच बजे। कहना न होगा कि यह किसी भी उद्योगी का हृदय तोड़ देने वाली असफलता थी। किन्तु कर्मवीर अण्णा इस असफलता से निराश न हुआ। उसे सन्तोष था कि उसने मानवीय क्षमता भर जो प्रयत्न किया जा सकता था किया। वह सीधा इन्हीं पैरों परीक्षक के पास जायेगा और सारी परिस्थिति बतला देगा। आशा है परीक्षा में बैठने की अनुमति मिल जायेगी। और यदि तब भी अनुमति न मिली तो इसे हरि इच्छा मानकर अगले वर्ष की प्रतीक्षा करेगा।

अण्णा सीधा विद्यालय पहुँचा। पता चला कि अनेक कारणों वश परीक्षा आज शुरू नहीं हो सकी कल से प्रारम्भ होगी। अण्णा के हर्ष का पारावार न रहा। किन्तु शीघ्र ही उसका वह हर्षातिरेक उतर गया और उसे निराशपूर्ण असफलता के प्रभाव से टक्कर लेनी पड़ी। प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने पर भी जब प्रधान परीक्षक ने उसको सत्रह वर्ष का न मानकर हठात् परीक्षा में न बैठने दिया तब उसने इसको परमात्मा की इच्छा माना और यह सोचता हुआ घर लौट पड़ा कि अवश्य ही इस असफलता के पीछे कोई हितकर रहस्य छिपा हुआ है। एक वर्ष तक और भी अधिक तैयारी करने के बाद अण्णा ने वह परीक्षा अगले साल को ल्हापुर जाकर दी और प्रथमतम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। धन्य है इस उद्योग, साहस तथा धैर्य को। अण्णा के यही तो वे दो गुण थे जिन्होंने उसे आगे चलकर संसार का एक विख्यात पुरुष और समाज का महान् सेवक बन सकने का पुण्य प्रदान किया।

गाँव पाठशाला की सारी परीक्षायें अण्णा ने पास करलीं किन्तु आगे पढ़ने की उसकी इच्छा बनी रही। ज्यों-ज्यों मनुष्य का ज्ञान बढ़ता जाता है:

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

त्यों-त्यों अधिक ज्ञान प्राप्त करने की उसकी जिज्ञासा बलवती होती जाती थी। ज्ञान में एक ऐसा ही अनिर्वचनीय आनन्द एवम् आकर्षण होता है। इसका अनुभव वे भाग्यवान् पुरुष ही कर सकते हैं जो ज्ञान प्राप्त करने के लिये तन-मन-धन की कोई भी बाधा न मानकर अग्रसर होते हैं।

पिता के पास पैसा नहीं और अगली कक्षाओं की सुविधा रत्नागिरि में न थी। किन्तु अरुणा ने पिता से केवल अनुमति माँगी और विश्वास दिलाया कि वह वहाँ जाकर कालिज से बचे हुए समय में कोई अतिरिक्त काम करके शिक्षा के व्यय की व्यवस्था कर लेगा। उसके लिये उन्हें कष्ट न देगा। पिता भला ऐसे विद्या-पिपासु तथा परिश्रमी पुत्र को हतोत्साह करने का पाप किस प्रकार कर सकता था ? वह जानता था कि यदि घर के गुजर बशर के लिये वह अरुणा को घर रहकर और कुछ काम करने के लिये विवश करता है तो एक सामाजिक अपराध करेगा। समाज की सेवा के लिये उद्यत होने वाले लड़कों को स्वार्थ के लिये बाँध रखना अन्याय है अनुचित बात है जो किसी भी अभिभावक को नहीं करनी चाहिए। पिता ने भी खुशी-खुशी अरुणा को आगे पढ़ने की अनुमति दे दी और उसने रत्नागिरि जाकर के हाईस्कूल में प्रवेश ले लिया।

अरुणा ने अंग्रेजी की अच्छी तैय्यारी पहले से ही कर रक्खी थी। निदान प्रवेश-परीक्षा में इतने अङ्क लाया कि उसके लिये दो रुपया मासिक छात्र-वृत्ति स्वीकार की गई। अरुणा उन दो रुपयों में से आठ आना फीस के देकर शेष डेढ़ रुपये में अपना सारा खर्च चलाने लगा। उस मितव्ययी महान् ने जीवन की आवश्यकताओं को जीवन तक ही संयमित रख कर इस कुशलता से खर्च किया कि न तो अभाव अनुभव होने दिया और न एक पैसे के लिये पिता को ही कष्ट दिया। अरुणा जैसा सन्तोषी तथा संयमी व्यक्ति संसार में क्या करके नहीं दिखा सकता।

रत्नागिरि का जलवायु अरुणा के अनुकूल नहीं पड़ा। वह वहाँ बीमार रहने लगा। घर वापस चले आने की विवशता पूरी करके भी अरुणा ने कोई समय बेकार नहीं गँवाया। ठीक होते ही गाँव की पाठशाला में यह सोच

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर पाँच रुपये मासिक पर नौकरी करली कि वह अपना वेतन बचाकर कुछ रुपये जमा कर लेगा और फिर बम्बई जाकर अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त करेगा। अरुणा उस पाँच रुपये के वेतन में सात घण्टे स्कूल में पढ़ाया करता था और शेष समय में अंगरेजी की योग्यता बढ़ाया करता था। स्कूल के उस परिश्रम की उसने कभी भी शिकायत नहीं की, क्योंकि उह उसको अपने हित में समझता था। विद्या का दान जितनी अधिक मात्रा में किया जाता है, उतनी ही अधिक वह बढ़ती है इस रहस्य से वह अज्ञान न था। पढ़ने की अपेक्षा, पढ़ाने से अभ्यास अधिक पुष्ट एवम् प्रामाणिक होता है इसलिये वह विद्यालय में अधिक से अधिक पढ़ाने का साग्रह प्रयत्न किया करता था।

आवश्यक धन सञ्चय कर लेने के बाद अरुणा ने बम्बई में जाकर वहाँ के मनी—स्कूल में प्रवेश ले लिया और एक मित्र के साथ एक छोटे से कमरे में रहने लगे। बम्बई में विद्यार्जन के लिए अरुणा ने जिस विरल पुरुषार्थ का परिचय दिया उसे देख सुनकर मनुष्य की कार्य क्षमता पर आश्चर्य होता है और विश्वास दृढ़ हो जाता है कि मनुष्य में अनन्त शक्तियों का भण्डार भरा पड़ा है। यदि उसका समुचित उपयोग किया जाये तो किसी भी क्षेत्र और किसी दिशा में उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचा जा सकता है। किन्तु खेद है कि अधिकांश मनुष्य आलस्य, प्रमाद अथवा निराकांक्षा से प्रवञ्चित होकर अपनी इन शक्तियों को निष्क्रय पड़ा रहने देते हैं, जिससे वे अनुपयोगिता के दोष से कुंठित होकर नष्ट हो जाती हैं।

अरुणा ने साल के प्रारम्भ में ही एक नकद पुरस्कार की प्रतियोगिता की पात्रता सिद्ध करके उसमें भाग लिया और अँगरेजी का एक सर्वश्रेष्ठ लेख प्रस्तुत किया। मैदान अरुणा के हाथ में जाते देखकर अन्य छात्रों में ईर्ष्या जाग उठी और उन्होंने अरुणा पर नकल करने का दोष लगाया। स्वयं-सिद्ध है कि ईर्ष्या एक ऐसी सर्पिणी है जो पालने वाले को ही डसती रहती है। जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति न केवल भीतर ही भीतर दहकता रहता है, प्रत्युत दूसरों के दोष निकालने और हानि पहुँचाने की दुरभि सन्धियों में अपने मन मस्तिष्क की उन शक्तियों का विनाश करता रहता है जिनका उपयोग अपने अभीष्ट मार्ग में करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बहुत दूर तक पहुँचा जा सकता है। किन्तु खेद है कि लोग इस हानि को नहीं देखते और दूसरों की गति में अवरोध बनते-बनते स्वयम् ही पथ प्रस्तर की भाँति जड होकर अगति के अधिकारी बनते हैं।

परीक्षक के सामने अरुणा की उपस्थिति हुई और आरोप का स्पष्टीकरण माँगा गया। अरुणा ने साहस पूर्वक केवल इतना ही कहा—'मेरे पास मेरे हृदय में निहित सत्य के सिवाय और कोई प्रमाण नहीं है और जहाँ तक सत्यासत्य के निर्णय का प्रश्न है किसी भी विषय पर लेखन की पुनः परीक्षा लेली जाये। होना तो यह चाहिये था कि सभी प्रतियोगियों को पुनः परीक्षण में बिठाया जाता किन्तु परीक्षकों ने परेशानी, समय, तथा व्यय की बचत की दृष्टि से केवल अरुणा को ही कसौटी पर रख दिया। यद्यपि अन्याय था किन्तु अरुणा ने आत्म-विश्वास के बल पर चुनौती स्वीकार की और अब की बार पहले से भी अच्छा लेख प्रस्तुत कर झूठों का मुँह काला कर दिया। पुरस्कार की धन राशि अरुणा के हाथ आई। जिसका कुशलतापूर्वक उपयोग कर उसने शिक्षा सम्बन्धी अनेक अड़चनों को दूर कर लिया।

बम्बई जैसे शहर में अपना तथा अपनी शिक्षा का व्यय पूरा करने के लिये वह आदरणीय अध्यवसायी एक-एक रुपये की ट्यूशन करता था और आठ आने महीने पर हर सप्ताह एक सज्जन को समाचार पत्र पढ़कर सुनाने जाता था। इस प्रकार अरुणा आवश्यकता के लिये, मिल सकने वाले किसी भी काम का अवसर हाथ से न जाने देता था। उसने कभी भी पैसे की तराजू पर किसी काम में लगने वाले अपने परिश्रम को नहीं तोला। पैसे कितने ही कम क्यों न मिलते रहें किन्तु अरुणा काम करने में श्रम यापन करने में पराकाष्ठा तक ईमानदार रहता था। उसने पैसे के अनुपात में परिश्रम की कमी करके अपने में कामचोर की दुर्बलता विकसित न होने दी। परिश्रम की विशेषता जानने वाला अरुणा पारिश्रमिक से अधिक परिश्रम करने में विश्वास करने वाला व्यक्ति था। पैसों की कमी से कुढ़ कर परिश्रम की चोरी करने वाले व्यक्ति अपनी ही हानि करते हैं। इस दाँव-पेच से पैसे तो अधिक मिलते ही नहीं उल्टे मनुष्य को निष्क्रियता तथा अक्षमता का दोष दबा लिया करता है, जिससे वह आगे चलकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिक परिश्रम के अवसर पर भी निकम्मा साबित होता है । बुद्धिमान् अण्णा इस मँहगी तथा दोहरी हानि को उठाने के लिये कभी भी तैय्यार न था ।

इस प्रकार मितव्ययता, सन्तोष, छात्र वृत्तियों, ट्यूशनों तथा अन्य अनेक काम करके अण्णा ने क्रम से मैट्रिक, इन्टर और बी. ए. की परीक्षायें उल्लेखनीय श्रेणियों में उत्तीर्ण करके स्वावलम्बन के आधार पर आत्म-निर्माण का ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित किया और इस सिद्धान्त वाक्य को चरितार्थ कर दिखाया कि 'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है ।'

ग्रेजुएशन करके अण्णा कार्य क्षेत्र में उतरे और मराठा-हाईस्कूल में दो घण्टे पढ़ाने का काम कर लिया । इसके अतिरिक्त वे अनेक विद्यार्थियों तथा सैनिक अधिकारियों को तीन घटे गणित पढ़ाने जाते थे । उपार्जन के इस पारम्भिक काल में अण्णा ने जिस घोर परिश्रम का परिचय दिया, उस पर प्रकाश डालते हुए एक विद्वान् ने लिखा है—"बम्बई के दीर्घ विद्यार्थी एवम् अध्यापक जीवन में उन्होंने न कभी नाटक देखा, न सर्कस काफी दूर तक पैदल घूमना ही उनका एकमात्र मनोरञ्जन का साधन था । विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये दूर-दूर जाना पड़ता था, इसलिये काम के साथ मनोरञ्जन भी प्राप्त कर लेते थे । बम्बई के 'केथेड्रल गर्ल्स हाई स्कूल में वे गणित पढ़ाते थे और लड़कियों को पढ़ाने का प्रथम पाठ उन्होंने वहीं सीखा । अण्णा साहब सुबह साढ़ेचार बजे उठते थे । भात और दही का हल्का-सा नाश्ता करके घर से निकल पड़ते थे । गिर गाँव से माँझ गाँव से पैदल आकर साढ़े सात बजे वहाँ पढ़ाते थे । वहीं एक विद्यार्थी को पढ़ा कर होटल का आश्रय लेते थे । रोटी और चाय को पेट का रास्ता दिखला कर वे एक अंग्रेजी हाईस्कूल में एक घंटा गणित पढ़ाते थे । एक घण्टा और एक फारसी हाई स्कूल में पढ़ा कर वे दोपहर में लगभग दो बजे पर घर पहुँचते थे । तीन बजे पर फिर मराठा हाईस्कूल में जाने की जल्दी रहती थी । इसलिए दिन भर शरीर पर धारण किए कपड़ों को बिना उतारे ही वह भोजन समाप्त कर लेते थे । इसके बाद किसी होटल में चाय पीकर वे फोर्ट के हाईस्कूल में एक घंटा पढ़ाने जाते थे । दिन भर के इस अथक परिश्रम के बाद वे नौ बजे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घर पहुँचते, तब स्नान, भोजनादि से निवृत्त होकर बाद में पत्नी और बच्चों को पढ़ाते थे। इसके पश्चात् कहीं जाकर सोने का समय मिलता था। थकावट और आलस्य शब्द उनके जीवन-कोश से गायब हो गये थे।

अण्णा साहब के परिश्रम की यह बीर—गाथा जिसको उन्होंने आत्म-निष्ठा के बल पर निर्माण किया था यहीं तक सीमित नहीं रही, अपितु उत्तरोत्तर बढ़ती हुई उनके जीवन में दिन-दिन प्रसार पाती गई और अनेक लोक-हितकारी संस्थाओं में अमरत्व के साथ मूर्तिमान् हुई। निर्धनता और पुरुषार्थ के इस घोर सङ्घर्ष के बीच भी अण्णा साहब में उदारता, दानशीलता और परोपकार की कितनी उदात्त वृत्ति सक्रिय रहती थी उसके प्रमाण में यह कतिपय उदाहरण कुछ कम न होंगे।

शिक्षा-काल में जिस समय अण्णा केवल दो रुपये मासिक छात्रवृत्ति, एक रुपये मासिक की ट्यूशन और आठ आना मासिक समाचार पत्र सुनाने का पाते थे उसी समय उन्होंने दान तथा परोपकार के लिये एक पैसे रुपये की बचत प्रारम्भ करदी थी और जब यह राशि दो चार रुपये की हो जाती थी तब उसे किसी शिक्षा अथवा जन हितकारी संस्था को दान कर देते थे। इसी एक पैसा रुपया के दान फंड से उन्होंने समय-समय पर न जाने कितने निर्धन विद्यार्थियों व गरीबों, रोगियों, तथा आवश्यकताग्रस्त लोगों की सहायता की थी। अपनी इस अनुकरणीय उदारता पर टिप्पणी करते हुए अण्णा साहब ने स्वयं एक स्थान पर कहा है—'दूसरों की सहायता करने में मिलने वाला आनन्द ब्रह्मानन्द से कम नहीं होता यह मैंने अपनी इस सेवा में अनुभव कर लिया है और आजीवन इस बात का प्रयत्न करता रहूँगा कि मैं अपने इस आनन्द को यथावत् बनाये रहूँ।"

आगे चलकर जब अण्णा साहब ने मराठा हाईस्कूल में नौकरी की और सेवा के अधिकारियों को गणित पढ़ाने का काम लिया और उसी के अनुसार उनकी आय में वृद्धि हुई तो यही एक पैसा रुपये का परोपकार फंड उन्होंने बढ़ा करके पाँच रुपये प्रतिशत कर दिया जिससे वे 'दिमराठा-फाइव-सर्सेंट फण्ड कहा करते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी फंड के अन्तर्गत उन्होंने मुरुड गाँव की पाठशाला को पाँच सौ रुपये की सहायता देकर स्थापना कराई और लगभग आठ दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर शिक्षा दिलाने के साथ-साथ भोजन-वस्त्र की भी सहायता की। लोक-सेवा काल में अण्णा साहब जहाँ एक ओर अपनी संस्थाओं के लिये सार्वजनिक दान की याचना करते थे वहाँ दूसरी ओर अन्य संस्थाओं को यथासहाय अपनी व्यक्तिगत आय से सहायता करते थे। अपनी संस्थाओं को तो उन्होंने अपना तन, मन, धन, सभी कुछ दे दिया था। पूना के फर्ग्यूसन कालिज में केवल पचहत्तर रुपये के अल्प वेतन पर बीस साल काम करने के बाद जब उन्हें पेन्शन मिली, तब परिवार की आर्थिक स्थिति पर विचार किये बिना ही उस सर्वाङ्ग समाज-सेवक ने अपनी वह पेंशन, अपना वह एक मात्र विद्वत्ता तथा जीविका का सहारा अनेक बच्चों को शिक्षित बनाने के मन्तव्य से यह सोचकर दान कर देने का निश्चय किया कि परिवार की जीविका के लिये मैं पुनः विद्यार्थी जीवन जैसी गतिविधि अपना लूँगा। किन्तु पत्नी के बार-बार प्रार्थना करने और परिवार पर आ जाने वाले आर्थिक सङ्कट से अवगत करा कर किसी तरह उनका वह विचार बदल वाया। तब भी उन्होंने एक साल की पेंशन उक्त स्कूल को दान कर ही दी।

विधवा-आश्रम को स्थायित्व प्रदान करने के लिये उन्हींने परिवार की एक मात्र सम्पत्ति और अपने जीवन की निधि पांच हजार का अपना जीवन बीमा आश्रम को दान कर दिया। पत्नी के विरोध उत्पन्न करने पर उन्होंने प्रेम से समझाते हुए कहा—रुपये तो जीवन में कभी भी जमा किये जा सकते हैं किन्तु एक बार यदि इस नारी कल्याण की संस्था की नींव हिल गई तो इसके भविष्य की रक्षा नहीं की जा सकती और इस प्रकार यह विशाल वृक्ष, जिसकी छाया में समाज से सन्तप्त न जाने कितनी विधवायें आश्वासन की श्वास ले सकेंगी, उखड़ जायेगा। अब तुम्हीं सोचो कि अपने परिवार की आर्थिक सुविधा अधिक महत्त्वपूर्ण है या अपना यह विधवाश्रम! विधवाआश्रम के स्थापना काल में लोगों में दान देने की प्रवृत्ति का स्फुरण करने के लिये अण्णा साहब से पहले एक हजार रुपये का दान देकर व्यक्तिगत उदाहरण उपस्थित किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन रुपयों का प्रबन्ध उन्होंने पत्नी के हाथ कान और गले के साधारण जेवर बेचकर किया था। अण्णा साहब के इस व्यक्तिगत उदाहरण का इतना अनुकूल प्रभाव पड़ा कि लोगों ने उनके विधवा आश्रम को मुक्त मन और मुक्त हाथ से दान दिया। महिला-विद्यालय की स्थापना के बाद जब उसमें पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या अधिक हो गई तो उसके लिये एक भवन बनवाने की आवश्यकता हुई। इसके लिये भी लोगों से धन देने का आवेदन करने से पूर्व अण्णा साहब ने तीन हजार रुपयों की निधि अपने पास से जमा की। यह रुपये भी उनकी पत्नी ने अपने परिश्रम तथा घर के खर्च में से मितव्ययता द्वारा लड़कों की पढ़ाई और भविष्य की आवश्यकताओं के लिये बड़े यत्न से बचाकर रख पाये थे। बाद में तो उसके लिये हजारों रुपये की धन-राशि बात की बात में हीं जमा हो गयी थी।

उदाहरण के साथ-साथ अण्णा साहब में त्याग वृत्ति का भी वह स्वरूप देखने को मिलता है जो किसी भी शिक्षित तथा समाज हितैषी व्यक्ति के लिये अनुकरणीय आदर्श है। वह समय अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों के लिये स्वर्ण-काल था। पाँचवी छटवीं कक्षा तक अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों को सौ-पचास की नौकरी बड़ी आसानी से मिल जाती थी। कठिन स्थिति में जीवन व्यतीत करने पर पर भी अण्णा साहब ने थोड़ी शिक्षा पर सन्तोष कर अपने लिये सुख-सुविधा सञ्चय करने का प्रयत्न नहीं किया। उच्चतम शिक्षा उनकी आकांक्षा थी और उसके बाद समाज-सेवा उनका ध्येय था। उन्होंने अपार कष्ट उठाकर और अथक परिश्रम करके बी० ए० पास किया यदि वे चाहते तो उनको ऊँचे से ऊँचा सरकारी पद बिना किसी प्रयत्न अथवा शिफारिश के मिल सकता था और जीवन की सारी भूतकाल की कठिनाइयों एवम् कष्टों को मूल्य मयब्याज के मिल जाता। किन्तु त्यागमूर्ति अण्णा साहब ने सुख-सुविधा की तलाश न कर सेवा की तलाश की। अपनी योग्यता का लाभ अनेक स्कूलों तथा व्यक्तियों को देने के लिये वे घंटे-घंटे दो-दो घंटे अनेक स्थानों एवम् विद्यार्थियों को पढ़ाते रहे। और जिस समय वे दो-तीन सौ रुपया मासिक कमा सके थे श्री गोखले तथा तिलक की अपील पर उनके स्थापित किये हुए राष्ट्रीय कालिज 'श्रीफर्ग्यूशन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कालिज में केवल पचहत्तर रुपये मासिक पर जीवन भर के लिये चले गये। अपनी योग्यता को व्यक्तिगत सार्थकता में लगाने की अपेक्षा उसे राष्ट्र निर्माण की सेवा में लगाना उन्होंने अधिक महान्, उपयोगी और उचित समझा। श्री अण्णा साहब के इस तप, त्याग एवं उदारतामय जीवन ने उन्हें अण्णा साहब से महर्षि कर्वे बना कर सार्वजनिक सम्मान एवम् नमन का अधिकारी बनाकर सदा के लिये अमर बना दिया।

महर्षि कर्वे बम्बई में जिस समय भविष्य के कार्यों के लिये अपने जीवन का निर्माण करने में संलग्न थे तभी उनकी पत्नी श्रीमती राधाबाई का देहावसान हो गया। प्रिय पत्नी का यह वियोग उनके लिये इतना असह्य हो गया कि कि वे एक बार विचलित होकर जीवन के प्रति उदासीन से हो गये। घर आकर होता था। उनको और सब यातनायें तो दी ही जाती थीं, केशवपन की एक विकृत एवम् अपरूपतापूर्ण यातना और दी जाती थी। इस केशवपन की अनेक घटनाएँ तो अण्णा साहब की स्मृतिपटल पर साकार हो उठी जो उन्होंने अपनी आँखों से देखी थीं, उनके एक मित्र की पत्नी को विधवा होने पर केश मुडवाने के लिये विवश किया गया। इच्छा न होते हुए भी उसे अपने केश मुडवाने ही पड़े, क्योंकि यदि वह केश मुडवाने को तैय्यार न होती तो वह यह जानती थी कि उसे रस्सियोंसे बाँधकर और हंटरों से मार-मार कर वैसा करने के लिए विवश किया जाता और यदि तब भी स्वीकृति न देती तो मार-मार कर बेहोश कर डाली जाती और उसी अचेतनावस्था में उसके हाथ पैर तथा गर्दन बांधकर के मुडवा दिये जाते, केशवपन के लिए तैय्यार न होने वाली विधवाओं पर वैसा ही अत्याचार किया जाता था जैसा कि किसी समय में उस पर सती होने के लिये सत्याचार किया जाता था, निदान बेचारी ने दुर्दशा से बचने के लिये चुपचाप छाती पर पत्थर रखकर केश मुडवा लिये। उनके मित्र की पत्नी एक सुन्दर स्त्री थी और कुछ अधिक आयु की भी नहीं थी। केश मुड़ जाने के बाद प्रेतनियों जैसी अपनी सूरत देखकर उसे इतनी लज्जा तथा ग्लानि हुई कि वह चुपचाप एक कमरे में बन्द होकर पड़ रही और जीवन भर बाहर न निकली। उसने भोजन भी त्याग दिया और इस प्रकार शीघ्र ही घुल-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घुल कर अपने प्राण दे दिये। केशवपन के समय उसको एक बार देखने वाले फिर उस निरपराधिनी का शव ही देख सके।

महाराष्ट्र की विधवा स्त्रियों के लिये केशवपन की यह यातना बड़ी ही भयङ्कर थी। यह केवल एक बार ही नहीं बल्कि हर माह इसका प्रत्यावर्तन भी होता रहता था। अभागे रुढ़िवादियों का विश्वास था कि जब विधवा के केश नहीं मुड़ा दिये जाते वह पवित्र नहीं होती, उसे किसी धर्म-कर्म में भाग लेने का अधिकार नहीं होता। न तो वह कथा-कीर्तन में जा सकती थी और न धार्मिक पुस्तकों को पढ़ सुन ही सकती थी और न केश रहते हुए किसी को अपना मुँह ही दिखा सकती थी। केश मुडाकर कुरूप हो जाने पर ही वह किसी के सन्मुख निकल सकती थी इतना ही नहीं उस समय लोगों की यह धारणा थी कि सकेश विधवा के बालों से पानी की जितनी बूँदें टपकती हैं उतने ही बार उसके दिवंगत पति को कीड़े का जन्म लेना पड़ता है। धन्य है इस अन्धविश्वास तथा अविवेक शीलता को जिसके आधार पर एक मानवी को प्रेतनी बनाकर धर्म का सन्तोष किया जाता था और मनुष्य के पुनर्जन्म का सम्बन्ध उसके अपने कर्मों कुकर्मों से न मानकर विधवा के बालों से टपकी हुई पानी को बूँदों से जोड़ा जाता था।

महर्षि कर्वे ने विधवाओं की इस दुर्दशा का मुख्य कारण समझ लिया था। वह था उनका अशिक्षित, परावलम्बी, अन्धविश्वासिनी तथा आत्मविश्वास हीन होना। यदि विधवायें शिक्षित हों, उन्हें आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़े हो सकने की योग्यता हो वे अपने कर्तव्यों तथा अधिकारों को पहचान सकें और साहसपूर्वक उनकी रक्षा कर सकने में सक्षम हो सकें तो निश्चय ही उनका उद्धार हो जायेगा और वे समाज के अत्याचार का प्रतिबन्ध करके सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेंगी।

कर्वे का पत्नी-शोक का स्थान विधवाओं के लिए कुछ करने के सङ्कल्प ने ले लिया। उन्होंने अपनी शक्तियों को सम्भाला क्षमताओं को पुनः प्रबुद्ध किया और समाज-सुधार की दिशा में अग्रसर होने के लिये घर से प्रस्थान कर दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विधवा उद्धार के उपायों में विधवा-विवाह के समर्थक एवम् प्रचारक महर्षि कर्वे ने सबसे पहले आनन्दीबाई नाम की एक विधवा से विवाह करके सक्रिय उदाहरण उपस्थित किया। उन्होंने इस बात की तनिक भी परवाह न की कि समाज की एक प्राचीन रुढ़ि पर आघात करने से क्या प्रतिक्रिया होगी ? वे विवाह करके घर में ही घुसे नहीं बैठे रहे। वे अपनी पत्नी आनन्दी बाई को लेकर सभाओं तथा सार्वजनिक संस्थाओं में जाते और मूढ़ तथा पुरातन पंथियों के व्यङ्ग एवं संकेत सहते। उन्हें इस पुण्य कार्य के लिये न केवल आलोचना का ही लक्ष्य बनाया गया बल्कि माता-पिता ने छुटकारा दे बहिष्कृत भी कर दिया गया न जाने कितने अविवेकियों ने उनके घर आकर उन्हें मुँह पर ही धिक्कारा तथा तरह-तरह से तिरस्कृत किया। किन्तु वह साहसी धीर वीर समाज-सुधारक चट्टान की तरह अडिग रहकर सब कुछ सहता रहा। न जाने कितने लोगों ने विच्छेद कर प्रायश्चित्त करने का अनुरोध किया। ऐसे लोगों के लिये उस सत्पुरुष का एक ही उत्तर रहता था कि यदि जिस धर्म-ग्रन्थ में सत्कार्यों के लिये भी प्रायश्चित्त करने का निर्देश हो सकता है मैं ऐसे ग्रन्थों को सबसे गई गुजरी पुस्तक समझता हूँ। मैंने कोई पाप नहीं किया फिर प्रायश्चित्त किस बात का। लोगों ने डराया कि तुम्हारा यह काम ठीक नहीं। इससे तुम समाज में आगे न बढ़ पाओगे, तुम्हारे लोग, तुम्हारे मित्र और तुम्हारे परिजन तुमसे छूट जायेंगे। महर्षि कर्वे ने स्पष्ट तथा दृढ़तापूर्वक कह दिया कि जिस कार्य को मैंने अच्छी तरह विवेक की कसौटी पर परख कर किया है जब उसके लिये एक परिवार तो क्या पूरा संसार और यहाँ तक कि प्राण ही छूट जायें तो भी मुझे कोई चिन्ता नहीं होगी। अपने सिद्धान्त, विवेक तथा सत्कार्य में कर्वे की यह अखंड निष्ठा देखकर विरोधियों का जोश ठण्डा पड़ गया और समाज में उस वीर सेनानी के समर्थक पैदा होने लगे।

समाज की गति विचित्र है। जहाँ पहले लोग कर्वे के पास विधवा विवाह का विरोध करने और उन्हें धिक्कार ने आते थे अब अनेक लोग उसका समर्थन तथा प्रशंसा करने को आने लगे। महर्षि कर्वे ने देखा कि अब लोग उनके विचारों का मूल्यांकन करने लगे हैं इसलिये कोई ऐसा सङ्गठन बनाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिये जो इस क्रान्ति अथवा नवीन विचार धारा को आगे बढ़ाने का काम करे। निदान उन्होंने ने 'विधवा विवाह उत्तेजक मण्डली' के नाम से ऐसे तरुणों का एक संगठन बनाया जो न केवल विधवा-विवाह का समर्थन एवम् प्रचार ही करते थे बल्कि विधवाओं से विवाह भी करने को तैयार थे। उनसी इस 'विधवा-विवाह उत्तेजक मण्डली' के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने प्रदेशों में धुआँधार प्रचार किया और अपने तत्वावधान में अनेक विधवा-विवाह कराये जिसके फल-स्वरूप सदियों से चली आ रही एक अन्याय एवम् हानिपूर्ण रूढ़ि की शृङ्खला खंड-खंड होकर गिर गई और बेचारी विधवाओं की ओर सहानुभूति पूर्ण दृष्टि से देखा जाने लगा। समाज में विधवा-विवाह की चाहे परम्परा भले ही न चल पड़ी। तथापि महर्षि कर्वे ने अपने तप, त्याग तथा साहस के बल पर उसका द्वार-उद्घाटन कर दिया। मार्ग बन जाता है, द्वार खुल जाता है, तो देर सबेर लोग उस ओर चलने लगते हैं। यह उस तपस्वी के पुण्य का ही तो प्रभाव है जो आज विधवा-विवाह की उत्साहपूर्वक चर्चा होती सुनाई देती है और पुन-र्विवाहित दम्पति तिरस्कार अथवा तीखी दृष्टि से उस प्रकार नहीं देखा जाता जिस प्रकार पहले देखा जाता था।

अपने उदाहरण तथा विधवा-विवाहोत्तेजक मंडली, जिसका कि उन्होंने आगे चलकर 'विधवा-विवाह प्रतिबन्ध-निवारक मंडली' नाम रख दिया था। के प्रयत्नों के फलस्वरूप महर्षि कर्वे ने समाज की एक हानिकर रूढ़ि को छोड़कर समाज में एक हितकर एवम् नूतन प्रथा की स्थापना की। अब उन्होंने इस पर विचार करना प्रारम्भ किया कि इस कल्याण कारी स्थापना को स्थायित्व किस प्रकार मिले। उन्होंने देखा कि रूढ़ि की सताई हुई विधवाओं की दशा बहुत शोचनीय है। न उनमें शिक्षा है और न अपने पैरों खड़े होने की क्षमता। उनकी दीन-हीन दशा इतनी अनाकर्षक है कि विधवा विवाह के समर्थक व्यक्ति भी उनकी हीनता के कारण उनसे विवाह करने में सङ्कोच करते हैं। ऐसी दशा में विधवा-विवाह प्रथा को समाज में स्वभाविक गति मिल सकना कठिन है। कुछ ऐसा किया जाये कि विधवाओं में आत्म-विश्वास तथा चेतना का जागरण हो। उन्हें शिक्षित तथा गुणवती बनाकर आकर्षक बनाया जाये। उन्हें ऐसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिल्प तथा कलायें सिखाई जायें जिससे उनका परावलम्बन तथा हीनता का भाव दूर हो स्त्रीजनोचित का समावेश हो। जिससे लोग उनसे विवाह करने के लिए आकर्षित हों। जब तक विधवाओं को सुशिक्षित बनाकर उनमें आत्म-विश्वास का सृजन नहीं किया जायेगा और जब तक वे अपने उपयोगी नारी स्वरूप को पहचान कर कर्तव्य एवम् अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होतीं तब तक प्रयोजन सिद्ध न होगा। निदान उन्होंने विधवाओं की शिक्षा-दीक्षा के लिये एक आश्रम स्थापित करने का विचार किया। जिसका नाम उन्होंने अनाथ बालिकाश्रम मनोनीत किया।

विचार की उपयुक्तता एवम् उपयोगिता निर्णीत होते ही महर्षि कर्वे उसको मूर्त रूप देने के लिये तत्काल सक्रिय हो उठे। उन्होंने गाँव-गाँव में पैदल घूम घूम कर अपने विचारों का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया और लोगों से इस शुभ कार्य में धन दान करने के लिये प्रेरित करने लगे। लोग उसमें दान देने के लिये उत्साहित हों और उनके विचारों की यथार्थता में विश्वास करें इसलिये सबसे पहले उन्होंने अनाथ-बालिका-श्रम की निधि में परिवार की आगामी असुविधा को जानते हुए एक हजार रुपये का स्वयं दान किया। महर्षि कर्वे की इस उदारता का लोगों पर बड़ा अनुकूल प्रभाव पड़ा और देखते ही देखते समाज के हितैषी व्यक्तियों ने लगभग छः हजार रुपये की धनराशि जमा करके उनको दे दी।

आवश्यक धन-राशि हाथ में आते ही महर्षि कर्वे ने काम शुरू कर दिया। उन्होंने पूना से करीब तीन मील की दूरी पर एक छोटे से कुटीर का निर्माण कराया और उसी में अनाथ-बालिकाश्रम का काम शुरू कर दिया। धीरे-धीरे विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी। स्थान तथा पैसे की कमी होने लगी। श्री कर्वे ने पुनः द्वार-द्वार पर अलख जगानी और प्रचार के लिये सभाएँ करनी प्रारम्भ कर दीं। उन दिनों वे पूना के फर्ग्यूसन कालिज में पढ़ाते तो थे ही। इसलिये प्रचार कार्य के लिये कम समय मिल पाता था साथ ही उन्हें नित्य ही कालिज के बाद पूना से हिंगणे आश्रम का काम देखने तथा पढ़ाने भी जाना होता था। किन्तु जिस काम को कर्वे साहब अपने कन्धों पर ले लिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करते थे उसे पूरा करने में न तो कभी आलस्य करते थे और न किसी कष्ट से घबराते थे। पूना से हिंगणे जाने का कोई ठीक रास्ता न था और न कोई सवारी ही जा सकती थी। इसलिये श्री कर्वे नित्य कालिज के काम से निवृत्त कर शाम को सारा सामान पीठ पर लाद कर आश्रम पहुँचते थे और उस दिन का काम रात में देर तक पूरा करके सवेरे फिर कालिज आ जाया करते थे। इस व्यस्तता के रहते हुए भी उन्होंने अवकाश के दिनों का उपयोग कर अनेक शहरों तथा गाँवों का दौरा करके लोगों को आश्रम की सहायता करने के लिये प्रेरित किया। पच्चीस-पच्चीस गाँव का दौरा करने पर भी जब कर्वे साहब को केवल चार पाँच सौ रुपया मिला तो उन्होंने सोचा कि जन समाज में समुचित प्रेरणा उत्पन्न करने के लिये अभी मेरे त्याग की और आवश्यकता है। निदान उन्होंने प्रचार के सम्बन्ध में आयोजित एवम् जन सभा में अपने जीवन बीमा की पाँच हजार की धनराशि दान कर देने की घोषणा कर दी। बस फिर क्या था। लोगों के 'कर्वे साहब के विधवाश्रम को खुले हाथ दान देना शुरू कर दिया।

पूना के एक इन्जीनियर श्रीमान आगारोजी ने अपनी माता की स्मृति में एक हजार रुपये का दान दिया राज कोट के श्री सीताराम नारायण पंडित ने न केवल तीन सौ रुपये की नकद धनराशि दी बल्कि पचहत्तर रुपये प्रतिमाह भेजते रहने का वचन दिया जिसको उन्होंने पूरी तरह से निभाया भी और भवन की नई योजना सामने आने पर एक हजार रुपये का नकद और भी दान दिया। इसके अतिरिक्त लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, महात्मागांधी, नामदार हिल श्री इचलकरंजीकर, लेडीनार्थ कोर्ट, रमाबाई रानाडे तथा दामोदर पंथ फाटक जी जैसे महान् लोगों ने सैकड़ों हजारों रुपये का दान देकर महर्षि कर्वे के उस पुण्य कार्य का सम्मान किया। किन्तु पारवती वाई आठवले काशीबाई देवधर प्रभृति महिलाओं तथा अनेक अवकाम ग्रहण करने वाले अध्यापकों ने अपना सारा जीवन ही आश्रम के भेट कर दिया। महर्षि कर्वे की तपस्या तथा जन सहयोग के बल पर आश्रम का काम पूरी गति से चल पड़ा और शीघ्र ही उसके पास लाखों रुपये के के अपने भवन और लाखों की नगद धनराशि हो गई। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समय उस अनाथ बालिकाश्रम में सैकड़ों विधवायें शिक्षा तथा शिल्प का लाभ उठा कर स्वावलम्बिनी बन रही हैं।

विधवा आश्रम जिसका कि पूरा नाम अनाथ बालिकाश्रम है, स्थायी सुचारु रूप से सञ्चालित हो जाने के बाद महर्षि कर्वे ने दूसरी ओर ध्यान दिया। उन्होंने देखा कि प्रथम तो देश में नारी शिक्षा के लिये कोई संस्थायें नहीं हैं और जो हैं भी उनकी दशा बहुत खराब है। भारतीय बालिकाओं को जिस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है वैसी शिक्षा उन संस्थाओं में नहीं दी जाती है। इस अभाव को दूर करने के लिए महर्षि कर्वे का तपस्वी तथा समाज सेवी हृदय उत्सुक हो उठा। उन्होंने सोचा कि केवल विधवाओं की दशा में सुधार हो जाने से ही समाज का पूरा स्त्री वर्ग समुन्नत तथा स्वावलम्बी न हो सकेगा।

बालिकाओं के लिए, देश में ऐसी शिक्षा संस्थाओं की बड़ी आवश्यकता है जिनमें उनको शिक्षा के साथ पाकशास्त्र, सन्तान पालन, सिलाई, बुनाई आदि शिल्प तथा सङ्गीत, चित्रकला आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिये। उनके लिये वह सब कुछ सिखाया जाये जो एक भारतीय गृहिणी के लिये आवश्यक है। केवल पढ़ लिखकर नारियों का स्वावलम्बी हो जाना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें एक सुगृहिणी भी बनना है। गृहकला से अनभिज्ञ नारी, फिर चाहे वह कितनी सी सुशिक्षिता क्यों न हो समाज के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकती। समाज का निर्माण परिवारों से होता है और परिवार निर्माण का उत्तरदायित्व नारी पर है। यदि नारी सुशिक्षिता होने के साथ-साथ गृह कार्य तथा परिवार के पालन में दक्ष न होगी तो वह अपनी ही सन्तानों का समुचित निर्माण नहीं कर सकती। उनकी सन्तानें आप से आप प्रकृति विधि से पल बढ़कर समाज की अयोग्य सदस्य सिद्ध होगी। गृह की सुख-शान्ति तथा व्यवस्था भी नारी पर ही निर्भर करती है। गृह कला में दक्ष नारी से ही यह आशा की जा सकती है कि घर की सारी व्यवस्था, सारा प्रबंध इस ढङ्ग से रख सकेगी जिससे कि परिवार में पूर्ण शान्ति बनी रहे और सारे परिजन सन्तोष पूर्वक अपनी उन्नति की ओर बढ़ते रहें। नारी शिक्षा की वर्त-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मान संस्थाएँ तथा प्रणाली उनमें एक दक्ष गृहिणी बन सकने की क्षमता उत्पन्न कर सकने में अधिक सफल होती नहीं दीख रही है। जिस प्रकार आज की शिक्षा प्रणाली लड़कों को एक साधारण-सी नौकरी योग्य ही बनाकर छोड़ देती है। उसी प्रकार लड़कियों को भी गृह जीवन के अयोग्य ही बनाती जा रही है। समाज की उन्नति के लिये आवश्यक है कि लड़कियों के लिये ऐसी शिक्षा संस्था तथा प्रणाली की स्थापना की जाये जो उनके सर्वाङ्गीण विकास में पूरी तरह से सहायक सिद्ध हो सके।

विचार की पुष्टि महर्षि कर्वे की क्रिया शीलता का श्री गणेश ही होता था। उन्होंने पूरी तरह से महिलाओं के लिये एक आदर्श शिक्षा संस्था की आवश्यकता पर विचार कर लिया, बस फिर क्या था वे 'आदर्श-महिला-विद्यालय का सजीव चित्र लेकर कर्मक्षेत्र में सक्रिय हो उठे। अच्छे काम में उनके पास बिलम्ब का कोई प्रश्न ही नहीं था। १९०७ में रङ्गपञ्चमी के दिन उन्होंने इस शुभ स्थापना का सूत्रपात कर दिया। छः कन्याओं को लेकर 'आदर्श महिला-विद्यालय' का मुहूर्त मनाया गया।

महर्षि कर्वे को समाजोद्धार के इस दूसरे स्तम्भ में व्यस्त देखकर जहाँ अनेक लोगों को अपार हर्ष हुआ और वे सहायता के लिये आगे आने लगे। वहाँ बहुत से लोगों का भ्रमवश उनका यह काम उचित न जान पड़ा। ऐसी लोगों में 'अनाथ-बालिकाश्रम' के कार्यकर्ताओं की बहुतायत थी। उन्होंने समझा कि कर्वे साहब इस पहली संस्था से उदासीन हो गये हैं और एक नयी संस्था, इस संस्था की प्रतिस्पर्धा में खड़ी करना चाहते हैं। कितना आश्चर्य है कि लोग यह नहीं सोच पाये कि क्या कोई पिता अपने एक पुत्र की स्पर्धा में दूसरे पुत्र को खड़ा कर सकता है। महर्षि कर्वे के लिये उनकी स्थापना 'अनाथ-विधवाश्रम' किसी प्रकार पुत्र से कम नहीं था। उन्होंने उसका विचार धारण किया, उसको जन्म दिया और स्थायित्व प्रदान किया—तब भला वे उसकी प्रतिस्पर्धा में दूसरी संस्था को जन्म देकर उसका अमङ्गल किस प्रकार सोच सकते थे। वे तो समाज की दो भुजाओं के समान 'अनाथबालिकाश्रम' तथा आदर्श-महिला-विद्यालय' को दो सगे भाइयों के समान पालपोष कर खड़ा करना चाहते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किन्तु जहां विचार शीलता नहीं, किसी बात को ध्यानपूर्वक देखने और समझने का धैर्य नहीं, जहाँ किसी निर्णय में क्षिप्रता वर्तने की दुर्बलता हो वहाँ भ्रम होना स्वाभाविक ही है। अनाथ बालिकाश्रम के कार्यकर्ताओं को भ्रम हुआ और उन्होंने अपने इस भाव को यह कहकर व्यक्त तक कर डाला कि अण्णा साहब यदि अविधवाओं के लिये कुछ करना चाहते हैं तो इस संस्था से पृथक् होकर करें।

निश्चय ही अण्णा साहब के लिये यह एक दुःखव्यापी अपमान की बात थी। किन्तु जिस महात्मा ने अपनी मनोवृत्तियाँ, समाजसेवा में निमग्न कर इस सीमा तक गुणातीत बनाली हों कि उन पर किसी प्रतिक्रिया का कोई प्रभाव ही न पड़े, उसे भला उत्तेजना हो भी कैसे सकती थी। उनका सारा अहंभाव भारतीय नारी और अनाथ विधवाओं की कारुणिक दशा में डूबकर समाप्त हो चुका था। उन्होंने अपने उन सहयोगियों के उस प्रस्ताव का जरा भी बुरा न माना और हँसकर उत्तर दिया, मैं जो कुछ कर सकता हूँ, कर लेने दो, बाद में मैं स्वयम् ही हर स्थान से हट जाऊँगा। मैं तो संसार में कल्याण कार्यों में नींव का पत्थर बनने आया हूँ वह मुझे बनाना ही है। मुझे इस आत्मोत्सर्ग से वञ्चित करना क्या आप लोगों को सुखकर होगा? असतुष्ट कार्यकर्ताओं ने देखा कि अण्णा साहब में ऋषि की पवित्र आत्मा विकसित हो गई है। उन्हें तुरन्त अपनी भूल का भान हुआ और उन्होंने उनसे न केवल क्षमा ही माँगी वल्कि उनके दूसरे काम में प्राणपण से सहयोग करने की प्रतिज्ञा करली। मनुष्य की, धैर्य से स्थिर क्षमापूर्ण सद्वृत्ति किसका हृदय परिवर्तन नहीं कर सकती? आदर्श महिला-विद्यालय का काम तेजी से चल पड़ा।

समाजोद्धार के दूसरे मोर्चे से महर्षि का शङ्खनाद गूँजा और सेवा-सैनिक तन-मन-धन लेकर चल पड़े। सन् १९११ में हिंगणे के निकट ही विद्यालय-भवन के लिये भूमि खरीदना निश्चय हुआ। किसी प्रकार १६५०) रुपये का प्रबन्ध हुआ और जमीन खरीद ली गई। अब भवन निर्माण का बड़ा व्यय साध्य कार्य सामने आया। कर्वे साहब के सामने उनका परखा हुआ उपाय था। जो काम दूसरों से करना चाहते हो पहले स्वयं करो उन्होंने दान का प्रति-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेदन करने के साथ अपने पास से तीन हजार रुपये देने की घोषणा की। यह तीन हजार की धनराशि अण्णा साहब की परिवार-सुरक्षा-निधि थी। किन्तु इससे क्या अकेले अपने परिवार की सुरक्षा का क्या महत्त्व। सारा समाज सुरक्षित है, सारे परिवार सुरक्षित हैं। समाज से पृथक् परिवार का अस्तित्व है कहाँ ? और फिर समग्र समाज ही जिसका अपना परिवार बन चुका हो ऐसे विशाल भावी महर्षि को अकेले अपने परिवार की चिन्ता हो भी कैसे सकती थी ! ऐसी व्यष्टि प्रधान आत्माओं के प्राण ही उस प्रकार की संकीर्ण-विचार परिधि में घुटने लगते हैं। उन्हें आत्मवात जैसी पीड़ा होने लगती है।

निःस्वार्थ तथा कल्याणभावी नेता की प्राथमिकता जनता के लिये प्राणपूर्ण प्रेरणा बनती है। चारों ओर से धन स्वीकृति की प्रार्थनायें आने लगीं। श्री गोपालकृष्ण गोखले ने भारत सेवक समाज की निधि में से तुरन्त पाँच हजार रुपये भेट किये और वाड़ियानिधि के सेक्रेट्री ने आठ हजार रुपयों का नकद दान किया। देखते ही देखते आदर्श महिला-विद्यालय का विशाल भवन बनकर के खड़ा हो गया। उसे देखकर अण्णा साहब हर्ष-विभोर होकर कह उठे। 'अनाथ-बालिकाश्रम के विशाल-वृक्ष पर ही यह नूतन पौधा स्थित हुआ है और उसकी छाया में इसका पोषण भी होगा। इस मनोहर तथा मनोज्ञ अभिव्यक्ति के दोनों संस्थाओं के एकत्व का सन्देश देते हुए लोगों के रहे सहे भ्रम का भी निवारण कर दिया। सभी लोग उन दोनों संस्थाओं को दो सहोदरों की भाँति समान श्रद्धा एवम् स्नेह से देखने लगे।

दो कल्याणकारी संस्थाओं की स्थापना हो गई। ये दोनों बहुत ही उपयोगी स्थापना थी। किन्तु संस्थाओं की स्थापना मात्र ही पर्याप्त नहीं होती। उनका सञ्चालन सो भी सुचारु संचालन उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। संस्थाओं के समुचित संचालन के लिये उचित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता तब पूरी होती है जब अच्छे लोगों की खोज की जाये और उस योग्य उनका निर्माण किया जाये। अण्णा साहब ने इस ओर ध्यान दिया और 'निष्काम कर्ममठ' के नाम से एक और संस्था स्थापित की। कमी प्रारम्भ की होती है, समाज सेवा की भावना रखने वालों की नहीं। भगवती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भागीरथी का नैकट्य पाकर कौन ऐसा होगा जो उसके पवित्र प्रवाह में स्नान कर पुण्य लाभ न करना चाहे ! 'निष्काम-कर्म-मठ' में निष्काम-कर्म-योगियों की संख्या बढ़ने लगी । एक के प्रारम्भ किये हुए समाज सेवा के कार्य में अनेकों का सहयोगी होना ही सच्ची सामाजिक भावना है । किसी संस्था को स्थापित करना अथवा पूरे तन-मन से उसमें योगदान करना समान रूप से ही महत्त्वपूर्ण है । जो लोग ऐसा सोचते हैं कि संस्था तो अमुक ने स्थापित की है, वह उसकी है, उसका सारा श्रेय उसे ही मिलेगा, मैं इसमें सहयोग क्यों करूँ वे वास्तव में अहङ्कार रूपी पिशाच से ग्रसित होते हैं, उनमें अकर्मण्यता के साथ ईर्ष्या का दोष रहता है । ऐसी निकृष्ट तथा असामाजिक भावना से मनुष्य को सदा ही सावधान रहना चाहिये और जल्दी से जल्दी इस मोह जाल से मुक्त होकर किसी भी समाज सेवी संस्था में, मानव-जीवन को सार्थक तथा धन्य बनाने के लिये नियोजित हो जाना चाहिये ।

निष्काम कर्म-मठ में निष्काम कर्मयोगी आने लगे और इस संकल्प के साथ अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने लगे—समाज-सेवा ही हमारी ईश्वर सेवा है, उसकी सेवा करने में ही पुण्य परमार्थ समझना हमारी श्रद्धा है । विश्व के सृजनहार परमात्मा को साक्षी कर इस पुण्य कार्य में मैं अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण करता हूँ । आज से अब इस पर मेरा कोई अधिकार नहीं होगा । संस्था की आवश्यकता के अनुसार ही अब हमारा यह जीवन एक सञ्चालित तथा नियन्त्रित होगा ।

निष्काम कर्म-मठ की स्थापना हो जाने पर अण्णा साहब ने अनाथ-बालिकाश्रम, आदर्श-महिला विद्यालय तथा निष्काम-कर्म-मठ, तीनों संस्थाओं को मिलाकर 'महिलाश्रम' के नाम से एकीकरण कर दिया । इस प्रकार उन्होंने समाज-सेवा की ऐक ऐसी त्रिपथगा का निर्माण कर दिया जो कर्तव्य स्वरूप में भिन्न होते हुए भी उद्देश्य एवम् परिणाम में एक ही थी ।

महिलाओं के उत्थान कार्य के माध्यम से महर्षि कर्वे ने समाज-सेवा का जो सब से बड़ा और महत्त्वपूर्ण कार्य किया वह है 'भारतीय-महिला विद्यापीठ' की स्थापना । अनाथ-बालिकाश्रम, महिला विद्यालय एवम् निष्काम कर्म मठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की स्थापना हो जाने पर भी महर्षि कर्वे की आत्मा आश्वस्त नहीं हुई। अभी कुछ और अधिक करना है—ऐसी एक पुकार निरन्तर उनके अन्तःकरण में प्रतिध्वनित होती रहती थी और वे निरन्तर उस पर विचार करते रहते थे। किन्तु कोई सूत्र हाथ न आता था। जिज्ञासा बढ़ती ही गई साथ ही विचार मंथन भी। तभी एक दिन डाक के साथ उन्हें जापानी महिला विद्यापीठ की एक विवरण पुस्तिका मिली। आवश्यक कामों से निपट कर उन्होंने उसे खोला और एक सरसरी नजर उस पर डाली। उन्हें ऐसे लगा कि उनके अन्तःकरण की पुकार का उत्तर इस विवरण पत्रिका में निहित है। निदान वह जापानी महिला विद्यापीठ की विवरण पत्रिका उसके अध्ययन का विषय बन गई और उन्होंने और क्या करना है —इस आत्मिक प्रश्न का उत्तर खोज निकाला महिलाओं के लिये एक विशाल राष्ट्र व्यापी संस्था की स्थापना—यही वह उत्तर था—बस महर्षि कर्वे के विचार पटल पर 'भारतीय-महिला विद्यापीठ का चित्र प्रतिबिम्बित हो उठा और वह समाज सेवा का महान् महारथी तत्काल सक्रिय हो उठा।

सन् १९१५ में बम्बई में होने वाली 'राष्ट्रीय सामाजिक परिषद के इस अधिवेशन में अण्णा साहब ने अध्यक्ष पद से बोलते हुए भारतीय-महिला विद्यापीठ की अपनी नवीन योजना जनता के सम्मुख रखते हुए उसके उद्देश्यों को बतलाया जो इस प्रकार थे।

(१) विचारों में मौलिकता और व्यवहार में सरलता एवम् सादगी का विकास।

(२) जाति–धर्म निरपेक्ष उदार वृत्तियों का विकास करना।

(३) लड़कियों को सद्गृहिणी की कर्तव्य-निष्ठा एवम् उनकी महत्ता समझ कर, उनमें सामाजिक चेतना का जागरण करना।

(४) बालकों की तरह बालिकाओं की भी कौमार्य एवम् ब्रह्मचर्य की अवधि बढ़वाने का प्रयत्न करना। जो पहले आठ वर्षों से बारह वर्षों तक और फिर बीस वर्ष तक अग्रसर करना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(५) लड़कियों में आत्म-निर्भरता एवम् आत्म-विश्वास की प्रवृत्ति का विकास करना ।

(६) बालिकायें यथार्थ रूप से सुपत्नी, सुगृहिणी तथा सुमता बन सकें इसके लिये उन्हें गृहकला में कुशल बनाया जाना और पाक शिक्षा से इस योग्य बना देना चाहिए । जिससे कि वे आठ-दस लोगों का भोजन सुविधापूर्वक ठीक ढङ्ग से बना सकें ।

(७) उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये उचित पाठ्यक्रम निश्चित करना और शिक्षा एवम् प्रशिक्षण का व्यावहारिक अभ्यास भी कराया जाना चाहिये ।

भारतीय-महिला विद्यापीठ के उद्देश्य स्पष्ट करने के साथ उन्होंने यह भी बतलाया कि विद्यापीठ की सबसे बड़ी विशेषता यह रहना है कि बालिकाओं को जो भी शिक्षा दी जायेगी वह उनकी मातृ भाषा में होगी । शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी न रक्खी जायेगी और किसी भी प्रादेशिक भाषा में शिक्षा देने वाला स्कूल व कालिज विद्यापीठ से संलग्न हो सकेगा । जिन बालिकाओं को कालिज जा सकने का अवसर न होगा वे घर पर ही पाठ्यक्रम पूरा कर परीक्षा दे सकेंगी । इसी प्रकार बहुत दूर रहने वाली छात्राओं को यह सुविधा दी जायगी कि वे अपने स्थान पर ही विद्यापीठ की परीक्षा दे सकें । इस प्रकार भारतीयता के आधार पर स्थित यह विद्यापीठ लड़कियों को प्रपञ्चशास्त्र, पाकशास्त्र, आरोग्यशास्त्र, चित्रकला, सङ्गीत कला आदि की शिक्षा देकर तीन वर्षों में मैट्रिक पास करने के बाद ही बी० ए० (गृहीतागमा) की उपाधि दी जायेगी ।

महर्षि कर्वे द्वारा प्रस्तुत 'भारतीय-महिला विद्यापीठ' की इस विशाल राष्ट्रव्यापी योजना ने जनता को आमूल अभिभूत कर दिया । अपनी अपनी बौद्धिक स्तर के अनुसार लोगों ने उसे सुना और समझा । ऐसा नहीं कि उन्हें इसके लिये केवल समर्थन ही प्राप्त हुआ हो । विरोध का भी सामना करना पड़ा । हल्के तथा सामान्य धरातल वाले कतिपय बुद्धिवादियों ने तो यहाँ तक कह डाला कि यह एक ऐसी कल्पना है जिसको व्यावहारिक रूप दे सकना असाध्य है । इस प्रकार की विद्यापीठ की स्थापना का स्पष्ट देखना द्रष्टा में उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूरदर्शी दृष्टिकोण की कमी को ध्वनित करता है जिसके कारण 'विद्यापीठ' जैसे शब्द से प्रतिबिम्बित होने वाले उच्च आदर्श को नहीं देखा जा सकता। किन्तु उस वीतराग समाज सेवी पर इस विरोध का प्रभाव ही क्या पड़ना था। वह सुयोग्य समर्थकों को लेकर योजना में तन-मन-धन से एक निष्ठ होकर नियोजित होगया। कंधे पर झोली डालकर धन तथा जन समर्थन के लिये नगर-नगर गाँव-गाँव में अलख जगाने के लिये निकल पड़ा। इस सद्उद्देश्य के लिये उस वयोवृद्ध मिश्र ने गुजरात से मद्रास तक का अविराम दौरा किया। मदुरा, त्रिवनापल्ली, बङ्गलौर, तंजौर, कुम्भकोणम्, राजमहेन्द्री आदि न जाने कितने स्थानों की धूल छान डाली और अनेक समर्थक तथा सहायक खोज निकाले। उस दिशा से निवट कर वह परमार्थपर्यटक दूसरी दिशाओं में चला और पुनः पूना, बम्बई, गुजरात होता हुआ मध्यभारत, पञ्जाव, उत्तर-प्रदेश, बङ्गाल को मथता हुआ दक्षिण, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मैसूर और मद्रास की ओर घूम गया। इस प्रकार लगभग पूरे राष्ट्र का चक्कर लगाकर उस कर्मयोगी ने विद्यापीठ की स्थापित्व के लिए लगभग ६० स्थायी सदस्य बनाये और हर प्रान्त एवं प्रदेश को विद्यापीठ की राष्ट्रीय योजना में ग्रथित कर दिया।

महर्षि की साधना पूरी हुई और सुफल साकार होने लगे। दे अण्णा साहब ने संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित डाक्टर भण्डारकर को कुलपति तथा डाक्टर रङ्गलर परांजवे को उपकुलपति का दायित्व सौंपकर साठ सदस्यों, (पचपन पुरुष और पाँच महिलाओं के साथ ३ जून १९१६ की पुण्य तिथि पर महान् 'भारतीय महिला-विद्यापीठ का शिलान्यास कर दिया।

सबसे पहले महात्मा गाँधी ने बधाई के साथ दश रुपये भेजकर उसकी महत्ता स्थापित की और उपरान्त श्री म० के० गाडजिल ने दश हजार रुपये विद्यापीठ को दान देकर देश-देशान्तर के उदार व्यक्तियों को पुण्य परमार्थ का द्वारा दर्शा दिया। फिर तो अफ्रीका निवासी श्री लाँडेजी ने छब्बीस हजार और दानवीर श्रेणी सर विठ्ठलदास ठाकर सी ने तो पन्द्रहलाख लाख रुपये का दान देकर 'भारतीय महिला विद्यापीठ का भंडार ही भर दिया। उसकी आर्थिक समस्या स्थायी रूप में हल हो गई। लाखों रुपयें जगत् के उसके भवन बन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गये । अनेक वैतनिक तथा अवैतनिक शिक्षक, शिक्षिकायें अपनी सेवायें देने लगे और सैकड़ों हजारों लड़कियाँ पढ़ने तथा प्रशिक्षित होने के लिये आने लगीं । इस प्रकार राष्ट्रीय उद्धार का वह आन्दोलन तीव्रता एवम् सरलतापूर्वक एक स्थायी कार्यक्रम के रूप में चल निकला । अण्णा साहब इस ओर से निवृत्त होकर दूसरे क्षेत्र में चल दिये ।

अण्णा साहब का यह दूसरा कार्यक्षेत्र और कुछ नहीं, विद्यापीठ का ही प्रचार कार्य था । विद्यापीठ की पद्धति के अनुसार जहाँ भी किसी कालिज अथवा स्कूल खुलने की आवश्यकता एवम् सम्भावना होती वे तुरन्त वहाँ जाते और संस्था स्थापित करने में सहायता करते । इस प्रकार अण्णेगिरि, सतारा, वेलगाँव आदि न जाने कितने स्थानों पर उन्होंने अनेक कन्याशालायें, तथा स्कूल कालिज खोले और खुल वाये ।

संपूर्ण देश में महिला शिक्षा की दिशा में जन-जागरण कर उन्होंने सत्तर वर्ष की परिपक्व आयु में विद्यापीठ का विश्व व्यापी प्रचार करने के लिये बीड़ा उठाया और १९२९ में इस पुनीत पृथ्वी प्रदक्षिणा पर निकल पड़े । अपनी इस यात्रा में उन्होंने स्विटजर लैण्ड, आयरलैण्ड- फ्रांस, अमेरिका इङ्ग्लैण्ड, चीन, जापान, मलाया आदि न जाने कितने पूर्वीय तथा पाश्चात्य देशों की यात्रा की । इस यात्रा की अवधि में उन्होंने न केवल विद्यापीठ का दृष्टिकोण ही प्रचार किया अपितु उसके लिये धन संग्रह भी किया और लगभग सैंतालीस-हजार रुपया विद्यापीठ को दिये । जिनेवा, डेन्यार्क, अमेरिका, न्यूयार्क, जापान आदि में होने वाली शिक्षा परिषदों; सभाओं तथा अधिवेशनों में उन्होंने महिला शिक्षा सम्बन्धी भारतीय दृष्टिकोण तथा विद्यापीठ के महान् उद्देश्यों को प्रकट कर देश देशान्तरों के प्रतिनिधियों को इस सीमा तक प्रभावित किया कि विदेशों में देश की शाख ऊँची हो गई और लोग भारतीय महिला-विद्यापीठ के न केवल समर्थन एवम् सहायक ही बन गये बल्कि उससे कुछ सीखने के लिये भी उत्सुक हो गये । इस यात्रा के बाद महर्षि कर्वे अमेरिका गये और वहां पर भी अपने दृष्टिकोण का न केवल प्रचार ही किया बल्कि वहाँ की विभिन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्थाओं तथा व्यक्तियों से लगभग चौबीस हजार रुपये की विद्यापीठ के लिये प्रयत्न किये ।

अपनी इस संसार यात्रा में अण्णा साहब ने जिस मितव्यता का उदाहरण प्रस्तुत किया वह निःसन्देह किसी भी सार्वजनिक कार्यकर्ता के लिये अनुकरणीय है । आज जहाँ लोग राष्ट्र अथवा समाज के किसी छोटे से काम के लिये भी किसी देश की यात्रा करते हैं तो उनकी कतिपय दिनों की यात्रा में ही लाखों रुपयों का बिल राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था के मत्थे आ जाता, वहाँ महर्षि कर्वे की इस विशाल विश्व यात्रा में कुछ हजार ही खर्च हुए । उसमें भी उन्होंने मात्रा का अधिकांश व्यय अपने पास से ही किया । वे इस यात्रा में किसी हद तक मितव्ययी रहे इसका अनुमान एक इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब उन्हें पता चला कि विदेशों में एक बार दाढ़ी बनवाने के लिये एक रुपया तक खर्च करना पड़ता है तो उन्होंने दाढ़ी ही रखा दी और कहा—"अपने हाथ से दाढ़ी बनाना तो मुझे आता ही नहीं है और इसके अभ्यास के लिये मेरे पास समय नहीं है, साथ ही एक बार की दाढ़ी बनबाने के लिये एक रुपये की राशि खर्च करना मेरी दृष्टि में घोर अपव्ययता है । अस्तु दाढ़ी रखा देने के सिवाय और कोई विकल्प मेरे पास नहीं है ।"

मितव्ययतापूर्ण अर्थ नियन्त्रण अण्णा साहब के चरित्र का एक अभिन्न अङ्ग था । इस विषय में बाहर से लेकर घर तक उनका एक जैसा व्यवहार रहता था । उनकी इस अर्थ दृढ़ता के विषय में उनकी पत्नी आनन्दी बाई ने स्वयं एक स्थान पर रखा है—

"कर्वे जी का आर्थिक व्यवहार अत्यन्त स्पष्ट होता है । वे पाई-पाई का हिसाब रखते हैं । यह संस्था के व्यवहार में ठीक है, लेकिन घर में भी वे उसी कंजूसी का परिचय देते हैं ।"

पत्नी से इस बात का उलहना पाने पर उसका उत्तर रहता था—'मेरा जीवन जितना पारिवारिक है उससे कहीं अधिक सार्वजनिक है । यदि परिवार के आर्थिक मामलों में मैं अपना स्वभाव तथा हाथ बिगाड़ लूँगा तो निश्चय ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मेरा अभ्यास खराब हो जायेगा और सार्वजनिक विधि के सञ्चालन में स्खलन का दोषी बनूंगा जो कि मेरे लिए मरण से भी अधिक दुःखदायी बात बनेगी। घर को मैं अपने सार्वजनिक जीवन की प्रयोगशाला मानता हूँ कि जो जिस अनुशासन एवम् नियमों को अपने व्यक्तिगत एवम् पारिवारिक जीवन में सफलतापूर्वक नियोजित नहीं कर सकता, वह सार्वजनिक जीवन में भी असफल रहेगा। मनुष्य के एक से अधिक स्वभाव अथवा अभ्यास नहीं हो सकते, जिसमे कि वह व्यक्तिगत, पारिवारिक एवम् सार्वजनिक जीवन में भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यवहार कर सकें। पारिवारिक जीवन में जिस व्यवहार की सिद्धि कर सकेंगे, वही व्यवहार हमारा समाज में भी रहेगा उससे भिन्न नहीं हो सकता। परिवार समाज का ही एक छोटा रूप है। सामाजिकता की सिद्धि पारिवारिक जीवन से ही प्रारम्भ होती है। हो सकता है कि मेरे इस अर्थ नियंत्रण से आप लोगों को कुछ असुविधा होती हो, किन्तु मुझे खेद है कि मैं इस विषय में विवश हूँ, अपना अभ्यास विकृत नहीं कर सकता।

मेरा तो जीवन सार्वजनिक है और एक लोक-सेवक के परिवार को हर प्रकार से सहनशील तथा सन्तोषी होना चाहिए—ऐसी अपेक्षा करने का शायद मुझे अधिकार है। आवश्यकताओं की अपूर्ति में यथासम्भव कमी न होने दूंगा और अतिरिक्त सुख-सुविधा की साधना से न तो मैं अपना अभ्यास ही बिगाड़ूंगा और न आप लोगों का स्वभाव खराब करने का अनुत्तरदायित्व कर सकता हूँ। हम सब तो लोक सेवा के सैनिक हैं। कष्ट, असुविधा तथा यदा-कदा का अभाव तो हम लोगों के अलङ्करण और सन्तोष हमारी शोभा शक्ति तथा सम्मान है।'

विश्व भ्रमण से निवृत्त होकर अण्णा साहब पुनः भारत आये और स्थान-स्थान पर शिशु विहार, बाल अध्ययन मन्दिर तथा शिशुशालायें स्थापित करने में लग गये। इसी अवधि में उन्होंने बम्बई, अहमदाबाद, पूना, सूरत, बड़ौदा, भावनगर आदि न जाने कितने स्थानों के महिला, विद्यालय, कालिज तथा कन्याशालायें विद्यापीठ से संलग्न कराई और नई-नई शिक्षा संस्थाओं को जन्म एवम् जीवन दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार लगभग सौ वर्ष की आयु तक महर्षि कर्वे नारी उत्थान के कार्यों द्वारा देश का कल्याण करते हुए पुण्य प्राप्त करते रहे यह उन्हीं के पुरुषार्थ तथा सच्ची सेवा भावना का ही फल है कि उनकी स्थापित की हुई संस्थाओं में लगभग तीन-चार हजार बालिकायें शिक्षा पा रहीं हैं और सैकड़ों प्रतिवर्ष गृही-तागमा (जी० ए०) पी. ए. (प्रदेयागमा) जो कि बी. ए. और एम. ए. के समकक्ष माना जाता है—की उपाधि ले ले कर निकल और राष्ट्र की सेवा कर रही हैं। वे अनाथ विधवायें जो समाज के लिये अभिशाप और अपने लिये घोर भार बनी हुई थीं आज अण्णा साहब के आश्रम में हँसती, खेलती, पढ़ती और शिल्प सीखती हुई स्वावलम्बिनी, और लाठी, लेजम आदि की शस्त्र शिक्षा पा-पाकर सिंहनी बनती हुई अपने पैरों खड़ी होती जा रहीं हैं।

कहना न होगा कि महर्षि कर्वे की तपस्या त्याग तथा परिश्रम के फल-स्वरूप राष्ट्र के उद्धार में जो सहयोग एवम् सहायता मिली है वह अमूल्य है। उसका मूल्याङ्कन नहीं किया जा सकता, जिसके लिये यह समाज-सेवा का दिव्यदूत युगों-युगों तक राष्ट्र-सेवी श्रद्धालुओं द्वारा हमेशा स्मरण किया जाता रहेगा।

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा 'जनजागरण प्रेस' मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इस लिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org